Springboard ACADEMY

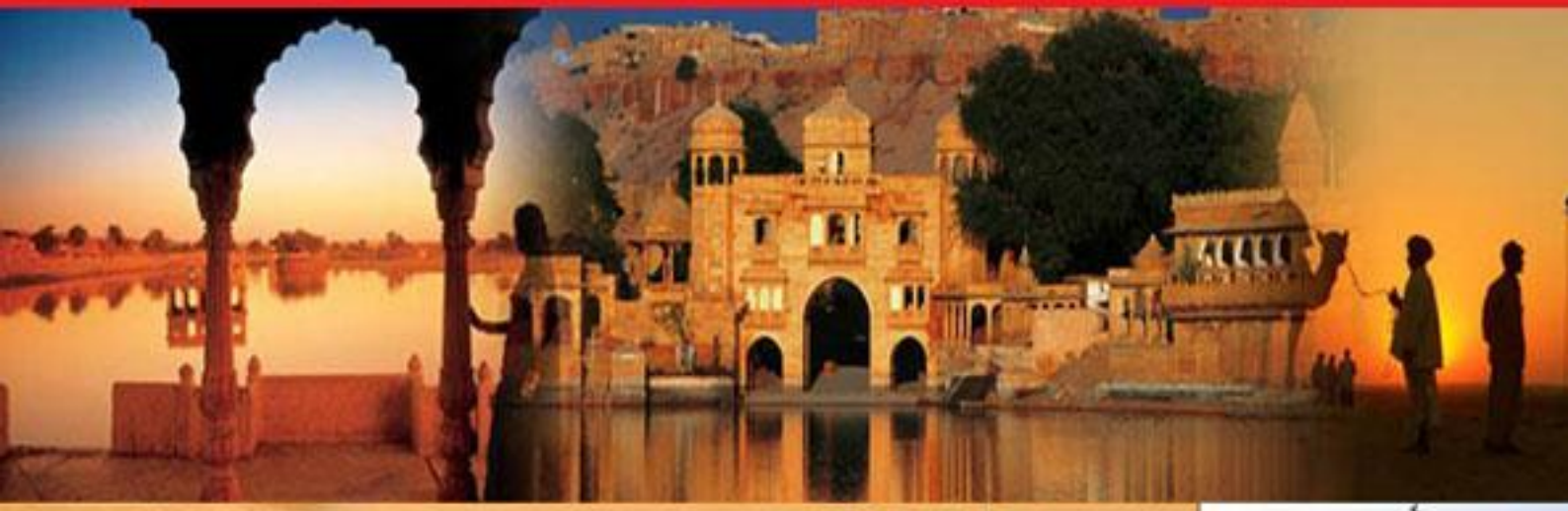

राजस्थान सामान्य ज्ञान

इतिहास, कला और संस्कृति

(RPSC के नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार)

AN INSTITUTE FOR IAS & RAS

Plot A-1, Keshav Vihar, Riddhi Siddhi Chouraha, Gopalpura Bye Pass Jaipur

M.No. : 9636977490, 8955577492, Website : www.springboardindia.org

INDEX

Topic	Page
1 राजस्थान का प्रारंभिक इतिहास	1
2 मध्यकालीन राजस्थान	
मेवाड़	7
मारवाड़ के राठौड़ों का इतिहास	26
बीकानेर के राठौड़ों का इतिहास	36
किशनगढ़ के राठौड़ों का इतिहास	41
चौहानों का इतिहास	42
रणथम्भौर के चौहानों का इतिहास	45
सिरोही के देवड़ा चौहानों का इतिहास	49
बूंदी के हाड़ा चौहानों का इतिहास	50
कोटा के हाड़ा चौहानों का इतिहास	51
आमेर के कछवाहों का इतिहास	52
अलवर राज्य का इतिहास	61
जैसलमेर के भाटियों का इतिहास	62
करौली का इतिहास यादव वंश	65
भरतपुर के जाट वंश का इतिहास	66
3 1857 की क्रांति में राजस्थान	68
4 राजस्थान में किसान आंदोलन	73
5 दयानंद सरस्वती और राजस्थान	78
6 प्रजामंडल आंदोलन	79
7 राजस्थान का एकीकरण	84
8 राजस्थान के लोक देवता	88
9 राजस्थान की लोक देवियाँ	94
10 राजस्थान के प्रमुख संत एवं संप्रदाय	101
11 राजस्थान की चित्रकला	111
12 राजस्थान के दुर्ग	119
13 राजस्थान की प्रमुख छतरियां	133
14 राजस्थान की जनजातियाँ	137
15 राजस्थान की हस्तकलाएँ	143
16 राजस्थान के त्यौहार	147
17 राजस्थान के लोक नृत्य	160
18 राजस्थानी भाषा की महत्वपूर्ण कृतियाँ	166
19 आधुनिक राजस्थानी साहित्य	173
20 राजस्थान के लोक गीत	176
21 राजस्थान के लोक नाट्य	178
22 राजस्थान के प्रमुख मंदिर	183
23 राजस्थान के प्रमुख मेले	191
24 राजस्थान में सामन्ती व्यवस्था	197

Springboard ACADEMY

राजस्थान का सामान्य ज्ञान

'दीधा निज गुण देवता, रिखियां दी आसीस।
जिण दिन सिरजी मरूधरा, सोणी नायो सीस।। '
'दीधा नहीं जो देवता, लुंठापण ही लीण।
इन्दर भाग्यौ आंतरै, अब लग बरखाहीन।।'

राजस्थान में मानव की सबसे पहली हलचल बनास और उसकी सहायक नदियों के आस–पास देखने को मिली।

पाषाण काल :
(1) बागोर . भीलवाड़ा जिले मे
– कोठारी नदी के किनारे
– पषुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य यहाँ मिले हैं।
– पाषाणकालीन औजारों के भंडार यहां मिले हैं।
– यहां का उत्खनन सर्वप्रथम 'बिरेन्दर नाथ मिश्र' ने किया।
(2) तिलवाड़ा . बाड़मेर जिले मे
– लूनी नदी के किनारे
– यह बागोर की बस्ती के समकालीन थी तो यहां भी पषुपालन के साक्ष्य प्राप्त हुये हैं।
– 'अग्नि कुंड '
अन्य केन्द्र :
3. बूढा पुष्कर : अजमेर
4. जायल : नागौर
5. डिडवाना : नागौर

☆राजस्थान सिंधु सभ्यता के युग में–

[1] कालीबंगा : हनुमानगढ जिले में घग्घर नदी के किनारे ।
– अर्थ → काली चूडियां
– 1952 → सर्वप्रथम अमलानन्द घोष ने उत्खनन प्रारम्भ किया।
– 1961–1969 → वास्तविक उत्खनन B.k. Thaper & B.B. Lal ने किया
(5 स्तरों तक)
– कालीबंगा से प्राक् हड़प्पा और विकसित हड़प्पा के अवषेष मिले हैं।
– सर्वप्रथम जुते हुए खेत के साक्ष्य मिले हैं।

Springboard ACADEMY

मध्यकालीन राजस्थान

(1) मेवाड़

'होतो नहीं मेवाड़ तो, होती नहीं हिन्दवाण।
खांडो कदै न खड़कतो, भारत छिपतो भाण।।'

– मेवाड़ सूर्यवंषी हिन्दू शासकों का शासन था।
– विष्व का सबसे दीर्घकालीन वंष
– यहां के शासकों को हिन्दुओं सूरज कहा जाता था।
– मेवाड़ के शासकों की कुल देवी – बाण माता
– मेवाड़ के शासक स्वयं को एकलिंग नाथ जी (षिव) के दीवान मानते है।
– मेवाड़ के राजचिन्ह में एक पंक्ति लिखी हुयी है–

'जो दृढ़ राखै धर्म को, विहि राखै करतार।।'

– गुहिल ने 566 A.D. में मेवाड़ में गुहिल वंष की स्थापना की।
ठसके वंषज गुहिल या गहलोत कहलाए।

(i) बापा रावल :

. इनका वास्तविक नाम था – 'काल भोज'
. ये हारित ऋषि की गायें चराते थे।
. हारित ऋषि के आषीर्वाद से 734 A.D. में राजा मान मौर्य से चित्तौड़ छीन लिया। और नागदा को अपनी राजधानी बनाया।
यहां पर एकलिंग जी का मंदिर बनवाया।
मुद्रा प्रणाली शुरू की। (अपने नाम के सिक्के चलाए)

(ii) अल्लट : शक्ति सिंह रणसिंह —सेमसिंह — सामंतसिंह —

. वास्तविक नाम– आलु रावल
. इसने 'आहड़' को अपनी राजधानी बनाया
. आहड़ में एक वराह का मंदिर बनवाया।
. हूण राजकुमारी हरिया देवी से शादी की।
मेवाड़ राज्य में नौकरषाही की स्थापना की।

. गुहिल शासक शक्ति कुमार के समय में मालवा के राजा मुंज ने चित्तौड़ के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। मुंज के वंषज राजा भोज ने त्रिभुवन नारायण षिव मंदिर जिसे अब मोकल का समिद्विष्वर मंदिर कहते हैं, का निर्माण करवाया।

जयसिंह (1680–1698 A.D.)

जयसिंह ने जयसमंद झील (इसे ढ़ेबर झील भी कहते है) का निर्माण करवाया। (गोमती, झाबरी, रूपरिल के पानी को रोककर) , इस झील में दो टापू हैं–

1. बाबा का मगरा
2. पादरी

अमरसिंह–II (1698–1710 A.D.)

. 1710 A.D. में देबारी समझौता।

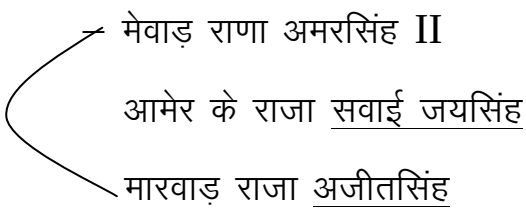

. अजीत सिंह को मारवाड़ दिलाने में सहायता

. अमरसिंह की बेटी चन्द्रकुंवर की शादी सवाई जयसिंह के साथ इस शर्त पर की गयी कि चन्द्रकुंवर का बेटा ही आमेर (जयपुर) का अगला राजा बनेगा।

संग्रामसिंह–II (1710–1734 A.D.)

1. सबसे पहले मराठों का हस्तक्षेप इन्हीं के समय हुआ।
2. मराठों ने यहां से कर वसूला था।
3. इसने उदयपुर में सहेलियों की बाड़ी का निर्माण करवाया।
4. हुरड़ा सम्मेलन की रूपरेखा तैयार की।

जगतसिंह–II (1734–1751 A.D.) – जगत विलास महल

. 17 जुलाई 1734 A.D. में हुरड़ा सम्मेलन बुलाया गया।

. उद्देष्य – मराठों के खिलाफ सभी राजपूत रियासतों को एक करना।

. वर्षा ऋतु समाप्त होते ही 'रामपुरा' में मराठों के खिलाफ युद्ध किया जाएगा।

. जयपुर – सवाई जयसिंह
जोधपुर – अभयसिंह
कोटा – दुर्जनलाल
बीकानेर – जोरावर सिंह
करौली – गोपालसिंह
किषनगढ़ – राजसिंह
बूंदी – दलेल सिंह

Springboard ACADEMY

मारवाड़ के राठौड़ों का इतिहास

. राजस्थान में आने वाली अंतिम राजपूत जाति।

. राष्ट्रकूटों की एक शाखा कन्नौज आती है। कन्नौज पर गहडवालों का अधिकार होने से बदायूं चले गये।

यहां से राव सीहा राजस्थान आता है।

* कई ऐतिहासिक स्त्रोतों में गहडवाल एवं राठौड़ों दोनों को एक ही बताया गया है।

. कुल देवी – नागणेची

. ये चील पक्षी को पवित्र मानते हैं।

. राठौड़ों के विरूद्ध (उपाधि)

1. रणबंका – (युद्ध क्षेत्र में बहादुर प्रदर्षित करने वाला।)
2. कमधज

राव सीहा :

. पालीवाल ब्राह्मणों की सहायता के लिए राव सीहा बदायूं से 1240 A.D. में खेड़ा (बालोतरा) आता है। और इसे अपनी राजधानी बनाता है।

. राव सीहा को 'राजस्थान के राठौड़ों का आदिपुरूष' कहा जाता है।

. 1273 A.D. में गायों की रक्षा करते हुये राव सीहा पाली के बीठू गांव में मारा जाता है।

. बीठू गांव में राव सीहा का स्मारक बना हुआ है।
जिसमें उसकी रानी पार्वती सोलंकी के सती होने का उल्लेख है।

2. राव आस्थान :

. जलालुदीन खिलजी के खिलाफ युद्ध करते हुए मारा जाता है।

राव धूहड़ :

. यह कर्नाटक से कुल देवी 'नागणेची' की मूर्ति लेकर आता है। इसे बाड़मेर गांव के नागाणागांव में स्थापित किया गया है।

. इनके छोटे भाई का नाम 'धांधल' था।

↓

ये लोकदेवता पाबू जी के पिता थे।

रावल मल्लीनाथ :

. राज. के प्रसिद्ध लोकदेवता

. इन्होंने अपनी राजधानी 'मेवानगर' (नाकोड़ा) बनायी।

. मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते है।

. पत्नी – रूपा दे

Springboard ACADEMY

आमेर का कछवाहों का इतिहास :–

. भगवान राम के छोटे बेटे कुश के वंशज कंशवाहा कहलाए, जो कालान्तर में कछवाहा हो गया।
. कछवाहों की कुल देवी जमवाय माता।
* आमेर के कछवाहा शासक स्वयं को गोविन्द देव जी के दीवान मानते हैं।
. नखर से 'दुल्हराय' दौसा आता है, व दौसा में बडगुर्जरों को हराकर कछवाहा शासन की स्थापना करता है। ये घटना 1137 A.D. की है। और लालसोट की राजकुमारी से शादी करता है।
. कालान्तर में रामगढ़ में मीणाओं को हराकर इसे अपनी राजधानी बनाता है, यहां अपनी कुलदेवी जमवाय माता का मंदिर बनवाता है और इसका नाम जमवारामगढ़ रख दिया।
. दुल्हराय का वास्तविक नाम 'तेजकरण' था।

कोकिल देव :
. 1207 A.D. में मीणा शासकों को आमेर में हराकर वहां आमेर पर अधिकार कर लिया और राजधानी जमवारामगढ़ से आमेर ले आता है।

पृथ्वीराज :
. खानवा के युद्ध में राणा सांगा की सहायता करता है।
. पृथ्वीराज के पुत्र का नाम सांगा था, जिसने सांगानेर बसाया था।
. रानी का नाम – बाला बाई, जो बीकानेर के राव 'लूणकरण' की पुत्री थी।
. इसने अपनी रियासत में '12 कोटडी व्यवस्था' (सामन्ती व्यवस्था) लागू की।

भारमल : (1547–1573 A.D.)
. नारनौल के मुगल फौजदार मजनूँ खाँ की सहायता से अकबर से मिलता है।
. कालान्तर में अजमेर दरगाह में जियारत करने जा रहे अकबर से सांगनेर के 'चगताई खां' की मदद से मिलता है।
. जियारत से वापस लौटते समय साम्भर में अपनी बेटी हरखा बाई की शादी अकबर से कर देता है। अकबर इसे 'मरियम उज्जमानी' की उपाधि देता है।
. इस प्रकार मुगलों की अधीनता स्वीकार करने वाला तथा वैवाहिक सम्बन्ध बनाने वाला ये आमेर के पहले राजा थे।
. इसी हरखा बाई से कालान्तर में जहांगीर (सलीम) का जन्म हुआ।
. अमीर उल उमरा की उपाधि दी गयी।

भगवन्त दास :
. अकबर ने इसे 'अमीर उल उमरा' की उपाधि दी तथा 5000 का मनसबदार बनाया।

जैसलमेर के भाटियों का इतिहास

Springboard ACADEMY

. भाटी भगवान श्रीकृष्ण–अनिरूद्ध–प्रद्युम्न–7वीं पीढ़ी भाट्टी के वंशज है।
. भाटी यदुवंशी होते हैं, इसलिए जैसलमेर के राजचिन्ह में 'छत्राला यादवपति' लिखा हुआ है।
. भाटियों की कुलदेवी 'स्वांगिया माता'।

(प्रयाग)
↓
'' काषी मथुरा प्राग्वाट, गजनी अर भटनेर।

छुगम देरावर लद्रवो, नवमो गढ़ जैसलमेर।। ''
↙ ↓ ↘
(तन्नौट) (सियालकोट) (लोदष्वार)

. 285 A.D. में भट्टी ने भटनेर का किला बनाकर इसे अपनी राजधानी बनाया। भट्टी को 'भाटियों का आदिपुरूष' या भाटी राज्य का संस्थापक कहा जाता है।
. भटनेर के कारण ही भाटियों को 'उत्तर भड़ किंवाड' / उत्तरी सीमा का प्रहरी कहा गया है।

मंगलराव :
. गजनी के राजा डून्डी (मुस्लिम) ने मंगलराव को पराजित करके भटनेर छीन लिया। मंगलराव ने तन्नौट को अपनी नयी राजधानी बनाया।

देवराज :
. देवराज ने पंवारी से लोद्रवा छीनकर, लोद्रवा को अपनी राजधानी बनाया।
* मूमल (लोद्रवा की राजकुमारी) महेन्द्र की प्रेम कहानी में महेन्द्र अमरकोट का राजकुमार था।

जैसल :
. 12 जुलाई 1155 A.D. को जैसलमेर की स्थापना करता है व इसे अपनी राजधानी बनाता है।

मूलराज :
. अलाउदीन के गुजरात आक्रमण के समय भाटियों ने अलाउदीन के घोड़े चुरा लिए। अलाउदीन ने जैसलमेर पर आक्रमण किया, यह जैसलमेर का पहला साका था।

.

1857 A.D. की क्रांति में राजस्थान

. 1832 A.D. में A.G.G. (Agent to Governer General) मुख्यालय 'अजमेर' में स्थापित किया गया।

. राजस्थान के पहले A.G.G. 'मि. लॉकेट' थे।

Springboard ACADEMY

. 1845 A.D. में इस मुख्यालय को 'आबू' स्थानान्तरित कर दिया गया।

. 1857 A.D. की क्रांति के समय यहां A.G.G. 'Gearge Patrick Lawrence' था।

* Lawrence इससे पहले मेवाड़ का 'Political Agent' रह चुका था।

. Place	Political Agent	King
1. Kota	Berten	Ram singh
2. Jaipur	Eden	Ram singh II
3. Jodhpur	Mackmesan	Jakth singh
4. Udaipur	Shawers	Swaroop singh
5. Bharatpur	Morrison	Jaswant singh II

. राजस्थान में अंग्रेजों की सैनिक छावनियां –

नसीराबाद (अजमेर)
नीमच (M.P.)
एरिनपुरा (पाली) – उस समय जोधपुर रियासत में आता था।
देवली (टोंक)
खैरवाड़ा (उदयपुर) } इन दोनों छावनियों ने 1857 की क्रांति में भाग नहीं
यावर (अजमेर) } लिया था।

नसीराबाद :
. 28 मई 1857 –राज. में सबसे पहले नसीराबाद की छावनी में विद्रोह हुआ।
. 28 मई 1857 को 15वीं Native Infantry के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया।

राजस्थान में किसान आंदोलन

बिजौलिया किसान आंदोलन :
. बिजौलिया वर्तमान भीलवाड़ा जिले में स्थित है, तत्कालीन मेवाड़ रियासत का 'अ' श्रेणी का ठिकाणा था।

Springboard ACADEMY

. राणा सांगा ने अशोक पंवार को ऊपरमाल की जागीर दी थी और इसका सदर मुकाम बिजौलिया था।

(खानवा के युद्ध में राणा सांगा की तरफ से अशोक पंवार लड़ता है)

. बिजौलिया में 1897 A.D. से किसान आंदोलन शुरू होता है। यह आंदोलन 'धाकड' जाति के किसानों द्वारा किया गया।

. इस आंदोलन के मुख्य कारण :

1. 84 प्रकार की लाग–बाग (कर)
2. लाटा–कूंपा व्यवस्था (खेत में खड़ी फसलों के अनुमान पर)
3. चंवरी कर, तलवार बंधाई कर

(किसान की बेटी शादी पर)   (नये जागीरदार बनने पर)

. यह आंदोलन मुख्यतः 3 चारणों में विभक्त था

I चरण	⟶	1897–1914	(स्वतः स्फूर्त)
II चरण	⟶	1914–1923	(विजयसिंह पथिक)
III चरण	⟶	1923–1941	(जमनालाल बजाज)

प्रथम चरण (1897–1914 A.D.) –नेता : फतेहकरण चारण, ब्रह्मदेव, प्रेमचन्द भील

. बिजौलिया का ठाकुर किशनसिंह था, जिसने प्रजा पर कई तरह के कर लगा रखे थे।

. गिरधारी पुरा नामक एक गांव में एक मृत्युभोज के अवसर पर किसानों की सभा हुई, साधुसीताराम दास के कहने पर नानजी व ठाकरी पटेल मेवाड़ महाराणा से मिलने भेजा गया। ये मेवाड़ महाराणा से मिलने में असफल रहे।

. रियासत की तरफ से हामिद खां को ठिकाने की जांच करने के लिए भेजा गया।

. नानजी व ठाकरी पटेल को बिजौलिया ठाकुर ने बिजौलिया से निष्कासित कर दिया।

पहले चरण में इस आंदोलन में अधिक सफलता नहीं मिल पायी थी, अतः यह आंदोलन स्वतः स्फूर्त चलता रहा।

प्रजामण्डल आंदोलन

. 1927 A.D. में 'अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद' की स्थापना की गयी (बम्बई में)

. विजयसिंह पथिक को इसका उपाध्यक्ष बनाया गया।

. 1928A.D.में 'राजपूताना देशी राज्य लोक परिषद' का गठन किया गया।

. 1931 A.D.में अजमेर में इसका पहला अधिवेशन हुआ, अध्यक्ष थे – रामनारयण चौधरी
. 1938 A.D.के कांग्रेस के हरिपुरा (सुभाषचन्द्र बोस अध्यक्ष) अधिवशन में रियासतों (देशी) में चल रहे आंदोलनों को कांग्रेस ने समर्थन दिया।

जोधपुर में प्रजामंडल आंदोलन :
. 1917A.D. में चांदमल सुराणा ने 'मारवाड़ हितकारिणी सभा' की स्थापना की।
. 1920 A.D.में जयनारायण व्यास ने 'मारवाड़ सेवा संघ' की स्थापना की। 1920–1921 में मारवाड़ सेवा संघ ने तौल आंदोलन चलाया था। { 1 तौल – 100 सेर / 1 तौल – 80 सेर } कर दिया था

. 1929 A.D. में जयनारायण व्यास ने 'मारवाड़ राज्य लोक परिषद' की स्थापना की। 1931 A.D. में इसका अधिवेषन पुष्कर में हुआ इसकी अध्यक्षता 'चांदकरण शारदा' ने की। इस अधिवेशन में काका कालेलकर व कस्तूरबा गांधी आए थे।
. 1931 A.D. में जयनारायण व्यास ने 'Marwar Youth league' की स्थापना की।
. 1932 A.D. में जोधपुर में स्वाधीनता दिवस मनाया गया। छगन राज चौपासनी वाला ने तिरंगा झंडा फहराया।
. 1934 A.D. में 'भंवरलाल सर्राफ' ने जोधपुर प्रजामंडल की स्थापना की।
. जोधपुर रियासत ने जयनारायण व्यास के जोधपुर में घुसने पर पाबंदी लगा दी।
. 1937 A.D. में बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने जोधपुर के प्रधानमंत्री 'डोनाल्ड फील्ड' को पत्र लिखकर जयनारायण व्यास के प्रवेश सम्बन्धी लगी पाबन्दी को हटाने की मांग की।
. भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान 19 जून 1942 को जेल में भूख हड़ताल कर रहे बालमुकुन्द बिस्सा की मृत्यु हो गयी, बालमुकुन्द बिस्सा ने जोधपुर में *'जवाहर खादी भण्डार'* की स्थापना की।
* बालकृष्ण कौल ने अजमेर में जेलों में कुव्यवस्था के विरूद्ध हड़ताल की थी।
. भारत छोड़ों आंदोलन के दौरान जयनारायण व्यास 'सिवाणा' किले में नजरबंद किया गया।
. जयनारायण व्यास की पुस्तकें :–
1. मारवाड़ की अवस्था
2. पोपा बाई की पोल

राजस्थान का एकीकरण

. 5 जुलाई A.D. को रियासती सचिवालय (V.K. Menon) की स्थापना की गयी।
. रियासत सचिवालय के अनुसार वे रियासतें जिनकी आय 1 करोड़ से, अधिक हो, व जनसंख्या 10 लाख से अधिक हो, अपना स्वयं अस्तित्व रख सकती है।
. उस समय राजस्थान में ऐसी 4 रियासतें थी
1. जयपुर

2. जोधपुर
3. उदयपुर
4. बीकानेर

. 16 जुलाई 1947A.D.को धारा–8 के तहत देशी रियासतों पर से ब्रिटिश सर्वोच्चता समाप्त कर दी गयी। (स्वतंत्रता अधिनियम के तहत)

. आजादी /एकीकरण के समय राज. में 19 रियासतें, 3 ठिकाणे थे।

1. लावा
2. नीमराणा
3. कुषलगढ़

. राजस्थान के एकीकरण के सबसे पहले प्रयास 1939 A.D. में लॉर्ड लिनलिथगो ने किए।

. कोटा महाराव भीमसिंह ने कोटा, बूंदी व झालावाड़ को मिलाकर हाड़ौती संघ बनाने का प्रावधान दिया।

. मेवाड़ महाराणा भूपाल सिंह ने राज., गुजरात व मालवा की रियासतों को मिलाकर राजस्थान यूनियन बनाने का प्रस्ताव रखा, इसके लिए 25, 26 जून 1947 को अधिवेषन भी बुलाया। इसमें 22 राजाओं ने भाग लिया, पर जयपुर, जोधपुर और बीकानेर के रियासतों के रूचि नहीं लेने के कारण यह निर्णय फलीभूत नहीं हो सका।

. डुंगरपुर महारावल लक्ष्मणसिंह ने डुंगरपुर, बांसवाडा व प्रतापगढ़ को मिलाकर वागड़ संघ बनाने का प्रस्ताव रखा।

. जयपुर महाराजा मानसिंह II ने भी प्रयास किए।

प्रथम चरण :

मत्स्य संघ का निर्माण :

. भरतपुर, धौलपुर, अलवर व करौली रियासतों को मिलाकर मत्स्य संघ बनाया गया।

. मत्स्य संघ का नामकरण K.M.मुंशी ने रखा।

. मत्स्य संघ में

धौलपुर महाराजा उदयभान सिंह – राजप्रमुख
करौली महाराजा गणेशपाल सिंह – उपराज प्रमुख
अलवर (तेजसिंह –राजा) – राजधानी

राजस्थान के लोक –देवता

'' पाबू हडबू राम दे, मांगलिया मेहा।
पांच्यू पीर पधारज्यो, गोगा जी जेहा।। ''

– राज. के पांच पीर –

पाबू जी
हडबू जी

मेहा जी
रामदेव जी
गोगा जी

1. पाबू जी :

. पाबू जी का जन्म, जोधपुर के राजा रावा धूहड़ के छोटे भाई धांधल के घर हुआ था।

. इनकी माता का नाम कमला दे था।

. पाबू जी को लक्ष्मण का अवतार कहा जाता है।

. इनका जन्म कोलूमण्ड गांव में हुआ था।

. पाबू की शादी अमरकोट के राजा सूरजमल सोढ़ा की पुत्री 'फूलम दे'। 'सुप्यार दे' के साथ हुयी थी।

. इस शादी के लिए जाते समय पाबू देवल चारिणी महिला की केसर कालमी घोड़ी लेकर जाता है।

. देवल चारिणी की गायें जायल का जींदाराव खिंची चुरा कर ले गया था पाबू अपने वचनों के मुताबिक फेरों के बीच से ही उठकर देवल पारणी की गायें बचाने के लिए आए।

. पाबू जींदराव खिंची से लड़ता हुआ मारा गया।

. चैत्र कृष्ण अमावस्या को कोलूमण्ड में पाबू जी का मेला भरता है।

. पाबू जी को ऊंटों के देवता व प्लेग रक्षक देवता के रूप में पूजा जाता है।

. ऊंट पालने वाली राईका / रैबारी जाति इन्हें अपना आराध्य देव मानती है।

. चाँदा व डामा पाबू जी के दो प्रमुख सहयोगी थे।

. आशिया मोड़ जी ने 'पाबू प्रकाश' नामक पुस्तक लिखी है।

. पाबू जी की फड़ भील जाति के भोपे रावण हत्या वाद्ययंत्र के साथ बांचते हैं।

. पाबू जी की पूजा भाला लिए हुये अश्वारोही के रूप में की जाती है।

2. रामदेव जी :

. रामदेव जी का जन्म उंडूकाष्मीर गांव (बाड़मेर) में हुआ था।

. इनके पिता का नाम अजमाल था, अजमाल को मल्लीनाथ जी ने पोकरण की जागीर दी थी।

. रामदेव जी के गुरू का नाम बालिनाथ था।

राजस्थान के प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय

1. दादुदयाल :

. जन्म – 1544A.D. (अहमदाबाद) में लोधी राम नामक ब्राह्मण के घर हुआ था।

. इनके गुरू का नाम ब्रह्मनन्द था, जो कबीर के शिष्य थे।

. 1585 A.D. में आमेर के राजा भगवान दास ने दादूदयाल को फतेहपुर सीकरी में अकबर से मिलवाया।

. इनकी मुख्य पीठ नरैना में है, जो दादूदयाल ने 1602 A.D. में स्थापित की थी।

. 1750 A.D. में जैतराम (नरैना पीठ के महन्त) जी के समय दादू पंथ कई शाखाओं में विभक्त हो गया था।

शाखाएं –
- खालसा – (नरैना पीठ के)
- विरक्त
- उतरा दे – (बनवीरदास –हरियाणा में –रतिया (उत्तर) चला गया था।)
- खाकी
- नागा

. दादू जी के 52 शिष्य थे, जिन्हें 52 स्तम्भ (थाम्बे) कहा जाता है।

. दादू दयाल ने अपने उपदेश ढुँढ़ाड़ी भाषा में दिए।

. दादूदयाल ने 'वाणी' नामक ग्रंथ की रचना की।

. दादूदयाल के प्रमुख शिष्य :

सुन्दरदास–

– 'नागा' शाखा की स्थापना की थी।

– नागा शाखा के साधुओं ने मराठा आक्रमणों के समय जयपुर के शासकों (प्रतापसिंह) की मदद की।

– नागा साधु हथियारबंद रहते थे, इनके रहने के स्थान को छावनी कहते हैं।

. सुन्दरदास की किताबें –
- सुन्दरसागर
- सुन्दरविलास
- सुन्दर ग्रन्थावली

. सुन्दरदास की मुख्य पीठ गेटोलाव (दौसा) में है।

राजस्थान की चित्रकला

. ब्राउन महोदय ने राजस्थान की चित्रकला को 'राजपूत कला' कहा।

. H.C.मेहता – 'हिन्दू शैली'

. आनन्द कुमार स्वामी ने 1916 में लिखी अपनी पुस्तक 'RAJPUT PAINTINGS' में राज. की चित्रकला को राजपूत चित्र शैली कहा तथा इस राजपूत चित्र शैली में पहाड़ी शैली (हिमाचल प्रदेश) को भी शामिल कर लिया।

. रामकृष्ण दास – राजस्थानी चित्रकला

Springboard ACADEMY

. मेवाड़ को राजस्थानी चित्रकला की जन्मभूमि कहा जाता है।
. राज. के सबसे प्राचीन चित्र जैसलमेर के जिनभद्र सूरी भंडार में संग्रहीत हैं।

मुख्य प्राचीन चित्र : 1. ओद्य नियुक्ति वृत्ति
2. दस वैकालिक सूत्र चूर्णि
} जैन ग्रन्थ

(NOTE : जैनों ने सबसे पहले कागज पर चित्र तथा क्षेत्रीय भाषा में लिखना शुरू किया।)

. भौगोलिक व सांस्कृतिक आधार पर राज. की चित्रकला को 4 भागों में बांटा जाता है–
1. मेवाड़ शैली – चावण्ड, देवगढ़, नाथद्वारा
2. मारवाड शैली – जोधपुर, बीकानेर, किषनगढ़, अजमेर, नागौर, जैसलमेर
3. ढुढांड शैली – जयपुर, अलवर, उणियारा, शेखावटी
4. हाडौती शैली – कोटा, बूंदी

1. मेवाड़ शैली :–

. 1260 A.D. में रावल तेजसिंह के समय आहड़ में 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि' नामक ग्रंथ चित्रित किया गया।
. 1423 A.D. में मोकल के समय देलवाड़ा में 'सुपार्श्वनाथ चरित्र' नामक ग्रंथ चित्रित किया गया।
. महाराणा कुम्भा ने भी मेवाड़ की चित्रकला में अपना योगदान दिया था।

– चावण्ड :–
. महाराणा प्रताप के समय चावण्ड से मेवाड़ की चित्रकला शैली का स्वतंत्र विकास प्रारम्भ होता है।

राजस्थान के दुर्ग

1. गागरौन का किला :
. वर्तमान झालावाड़ जिले में काली सिंध व आबू नदियों के किनारे स्थित है।
. गागरौण का किला एक जल दुर्ग है।
. इसका निर्माण डोड परमार शासकों ने करवाया था, इसलिए इसे डोडगढ़ भी कहते हैं। इसे धूलगढ़ भी कहते हैं।
. देवेन सिंह खिंची ने बीजलदेव डोड को हराकर इस पर अधिकार कर लिया था। (चौहान कुल कल्पद्रुम के अनुसार)
. जैत्रसिंह

Springboard ACADEMY

– 1303A.D. में जैत्रसिंह के समय अलाउदीन ने आक्रमण किया था।
– संत हमीदुद्दीन चिश्ती जैत्रसिंह के समय गागरौण आए थे, जिन्हें हम 'मीठे साहब' के नाम से जानते हैं। इनकी दरगाह गागरौण के किले में बनी हुयी है।

. प्रताप सिंह
– इन्हें हम संत पीपा के नाम से जानते हैं।
– इनके समय में फिरोज तुगलक ने गागरौण पर विफल आक्रमण किया था।
– संत पीपा की छतरी गागरौण में बनी हुयी है।

. अचलदास
– 1423 A.D. में मालवा का सुलतान होशंगशाह गागरोन पर आक्रमण करता है। इस समय गागरौण के किले का पहला साका होता है।
– अचलदास खिंची अपने साथियों के साथ लड़ता हुआ मारा जाता है।
–लाला मेवाड़ी के नेतृत्व में जौहर किया जाता है।
* अचलदास खिंची की अन्य रानी का नाम – उमा सांखला (जांगलू)
. शिवदास गाड़ण ने 'अचलदास खिंची री क्चनिका' नामक ग्रन्थ लिखा है।

. पाल्हण सिंह : (अचलदास का बेटा, कुम्भा का भांजा)
– 1444 A.D. में मालवा का सुल्तान महमूद खिलजी गागरौण पर आक्रमण करता है।
– कुम्भा अपने सेनानायक धीरज देव को भेजकर पाल्हण सिंह की सहायता करता है।
– इस समय गागरौण (मआसिरे मुहम्मदषाही में इसका जिक्र है।) के किले का दूसरा साका होता है। महमूद खिलजी ने गागरौण का नाम मुस्तफाबाद रख दिया था।
– बाद में गागरौण का किला महाराणा सांगा (मेवाड़) के अधिकार में आ गया था।
– सांगा ने अपने मित्र मेदिनी राय (चन्देरी) को यह किला दे दिया।

राज. की जनजातियां

1. कंजर :
– मुख्यतया हाडौती क्षेत्र में।
– मुख्य व्यवसाय : चोरी करना
. चोरी करने से पूर्व आशीर्वाद (देवता से) मांगते है, जिसे ये पाती मांगना कहते है।
. जोगणिया माता (चित्तौड़गढ़) – कंजरो की कुल देवी
चौथमाता (चौथ का बरवाड़ा, सवाई माधोपुर)
रक्त दंजी माता– बूंदी
हनुमान जी– आराध्य देव

Springboard ACADEMY

. हाकम राजा का प्याला पीने के बाद झूठ नहीं बोलते हैं।
. मरणासन्न व्यक्ति के मुंह में शराब ड़ाली जाती है।
. शव को दफनाते हैं।
. इनके मुखिया को 'पटेल' कहते हैं।
. मोर का मांस खाते हैं।
. इनके घरों में पीछे की तरफ खिड़की अनिवार्य होती है।
. महिलाएं चकरी नृत्य करती हैं। नृत्य करते समय विशेष प्रकार का पायजामा पहनते हैं, जिसे खुसनी कहते हैं।

2. कथौड़ी :
. उदयपुर जिले में अधिक संख्या।
. मूल रूप से महाराष्ट्र के हैं।
. खैर के वृक्ष से कत्था बनाते हैं, इसलिये कथौड़ी कहते हैं।
. कथौड़ी दूध नहीं पीते हैं।
. कथौड़ी शराब पीते हैं।
. महिलाएं भी पुरूषों के बराबर बैठकर शराब पीती हैं।
. महिलाएं गहने नहीं पहनती गोदना गुदवाती है।
. कथौड़ी महिला द्वारा पहने जाने वाली साड़ी 'फड़का' कहलाती है।
. इनका मुखिया 'नायक' कहलाता है।
. प्रमुख देवता –
  - डूंगर देव
  - बाद्य देव
  - भारी माता
  - कंसारी माता

. कथौड़ी एक संकटग्रस्त जनजाति है, केवल 35–40 परिवार ही बचे हैं।

राज. की हस्तकलाएँ

थेवा कला :
. विश्व में थेवा कला का एकमात्र केन्द्र – प्रतापगढ़
. थेवा कला – काँच में सोने का चित्रांकन।
. रंगीन बेल्जियम कांच का प्रयोग किया जाता है।
. प्रतापगढ़ का सोनी परिवार, इस कला में सिद्धहस्त है।
. 'नाथू जी सोनी' ने इस कला को शुरू किया था।
. वर्तमान में गिरीश कुमार इस कला को आगे बढ़ा रहे हैं।
. जस्टिन वकी ने इस अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलायी।

Springboard ACADEMY

टेराकोटा :

. पकाई हुई मिट्टी से मूर्तियां व खिलौने बनाए जाते हैं।

. मिट्टी को 800 ˚c temp. पर गर्म किया जाता है।

* राजसमन्द का मोलेला गांव टेराकोटा मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है।

* जालौर जिले के हरजी गांव मामा जी के घोड़े बनाये जाते हैं।

' मोहनलाला कुम्हार' को इसके लिए पद्म श्री मिल चुका है।

बड़ोपल (हनुमानगढ़) एक पुरातात्विक स्थल है, जहां से टेराकोटा मूर्तियां प्राप्त हुयी हैं, जो बीकानेर संग्रहालय में रखी हुयी हैं।

ब्लू पॉटरी :

. चीनी मिट्टी के सफेद बर्तनों पर नीले रंगों का अंकन।

. जयपुर इसका प्रमुख केन्द्र है।

. जयपुर महाराजा रामसिंह के समय चूड़ामण व कालू कुम्हार को भोला नामक कारीगर से प्रषिक्षण लेने के लिए दिल्ली भेजा।

. वर्तमान में इसके प्रमुख कलाकार कृपालसिंह शेखावत है, जिन्हें इसके लिए पद्म श्री से नवाजा जा चुका है।

. कृपाल सिंह जी ने नीले रंग के अतिरिक्त 25 से अधिक अन्य रंगों का प्रयोग किया, जो ब्लू पॉटरी की कृपाल शैली कहलाती है।

राजस्थान के लोक – नृत्य

घूमर :

. राजस्थान का राज्य नृत्य। (उम्मेद सिंह के समय शुरू)

. नृत्यों का सिरमौर।

. राजस्थान की आत्मा।

. केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है, विवाह एवं मांगलिक अवसरों पर विशेषतः गणगौर ।

. घूमर में हाथों का लचकदार संचालन आकर्षक होता है।

. लहंगे के घूम के कारण ही इसे घूमर कहा जाता है।

. इसमें विशेष 8 steps होते हैं, जिन्हें सवाई कहते हैं।

Springboard ACADEMY

. ढ़ोल, नगाड़ा, शहनाई वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है।
. इसे रजवाड़ी लोक नृत्य कहा जाता है। (राज परिवारों में विशेषतः)
. घूमर मुख्यतः तीन रूपों में होता है –
1. घूमर
2. लूर
3. झूमरियों

कच्छी घोड़ी :
. शेखावटी क्षेत्र का प्रसिद्ध लोकनृत्य। (व्यावसायिक नृत्य)
. केवल पुरूषों द्वारा किया जाता है।
. चार–चार पंक्तियों में पुरूष आमने–सामने खड़े होकर नृत्य करते हैं।
. नृत्य करते समय फूल की पंखुडियों के खिलने का आभास होता है।
. इसमें नृतक हाथ में तलवार रखते है।
. वाद्य यंत्र–चंग।

अग्नि नृत्य :
. जसनाथी सम्प्रदाय के लोगों द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
. बीकानेर का कतरियासर गांव इसका मुख्य स्थल है।
. नृत्य करते समय आग से मतीरा फोड़ना, तलवार के करतब दिखाना, प्रमुख है।
. नृत्य करते समय नृतक फर्ते–फर्ते बोलता है।
. आग के साथ राग व फाग का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है।
. बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने इस नृत्य को संरक्षण प्रदान कियां

Spring Board ACADEMY